Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"k 16 vad 10 30 vDrcj 2016 eY; 5 #i;s

प्रधान की कलम से

राष्ट्रीय सुरक्षा बनाम आंतरिक सुरक्षा

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

आज राष्ट्र की सुरक्षा राजनैतिक अखाड़ा बन गई है। बाहरी दुश्मनों से तो हमारी सेना, अर्ध सेना के जांबाज युद्ध या सर्जीकल आपरेशन करके भी निपट लेगें लेकिन आंतरिक दुश्मनों से निपटना आसान नहीं। किसी भी राष्ट्र को अपने सुरक्षा बलों पर फख्र होता है लेकिन हमारे राजनेताओं में इसे भी राजनैतिक रोटियां सेकने हेतू इस्तेमाल करने की होड़ लगा रखी है। आज समाज टुकड़ों में बंट चुका है और स्वार्थी तत्व असुरक्षा व भय का वातावरण पैदा कर अपने हित साध रहे हैं। समाज में सद्भावना सुरक्षा का संदेश देने वाले बहुत कम रह गए हैं।

हाल ही में हुए सर्जीकल आपरेशन में सेना की सराहना की बजाए सबूत मांगने से भी परहेज नहीं किया गया। दुश्मन सबूत नहीं आपकी की गई कार्यवाही का तरीका मांग रहा है। अत: नासमझी की टीका टिप्पणी से हमारी सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। वामपंथी पाकिस्तान से बातचीत से मसला सुलटाने का राग अलाप रहे हैं। बातचीत का रास्ता भी अपनाया जाना चाहिए लेकिन परिणाम सर्वविदित हैं। 'लातों के भूत, बातों से नहीं मानते' राष्ट्र को एकजुट होने की जरूरत है। अगर कश्मीर झगड़े का कारण है तो बलोचिस्तान क्यों नहीं? स्मरण रहे कि जम्मुकश्मीर पर पाकिस्तान ने कबाईलों के नाम से छदम अटैक 1947 में सनो से करवाया था तब राजा हरी सिंह ने भारत विलय पर हस्ताक्षर किए थे तथा भारतीय सेना ने उन्हे खदेड़ा था। नेहरू की भूल थी कि मामला अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद में ले गया। आज तक उनके कब्जे का भारतीय क्षेत्र ही पाकिस्तान के कब्जे में है, जिसका वह हर प्लेटफार्म पर मुद्दा बनाता है तथा उसी आड़ में आतंकवाद फैलाता है, जिसमें हमारे घाटी के नेता अपनी राजनीति को चमकाते हैं और प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पाकिस्तान के मददगार रहे जबकि बलूचिस्तान अप्रैल 1948 तक एक अलग मुल्क था उस पर भी पाकिस्तान ने हमला बोलकर जबरदस्ती कब्जा किया हुआ है। यह मामला यु एन ओ में क्यों नही उठाया गया ? पाकिस्तान के हर सूबे में असंतोष है, आज तक भारत ने उसका लाभ क्यों नहीं उठाया? बंगला देश उसी से अलग हुआ जो आज एक खुशहाल देश है। पाकिस्तान में गरीबी और भूखमरी है। धार्मिक नेता उन्माद सिखाकर जन्नत और हूरों का सपना दिखा गरीब बच्चों को जेहादी बना रहे हैं। अखंड भारत को तोड़ने के हर प्रयास शुरू से ही किए जा रहे हैं। कभी नकसलवाद की आड़ में तो कभी जे एन यू जैसे शिक्षा मंदिरों को अपनी नर्सरी बनाकर।

हर सच्चे भारतीय का कर्तव्य है कि सशस्त्र बलों का मनोबल बढाएं और भारत की एकता और अखंडता का दुश्मनों को सबब सिखाएं। कहीं सेना पर पत्थरबाजी हो रही है, कहीं असुहिषुणता की बातें करने वाले खुद भारत के शत्रुओं के साथ हज पर जाकर फोटो खिंचवा रहे हैं। जब कभी प्राकृतिक त्रास्दी आई तो सेना ने ही राहत दी। कश्मीर में आई बाढ़ के समय, अलगाववादियों को, पत्थर फिंक्वाऊ नेताओं को कंधों पर चढाकर बचाया, वो क्या था? सहनशीलता की परिकाष्ठा या असंहिष्णुता थी? लेकिन हमें तो राजनीति से मतलब है। राष्ट्र जाए भाड़ में। भारत ने कभी किसी पर युद्ध नहीं थोंपा लेकिन पाकिस्तान द्वारा किए गए हमले का मुंहतोड़ जबाब दिया। विडंबना यह है कि कश्मीर के अलगाव वादियों ने वहां के वाशिदें ब्राह्मणों को घर से बेघर कर दिया। अपना उनका किसी का भी बच्चा जेहादी नहीं है वह तो भारत या विदेश के किसी सुरक्षित कोने में आराम फरमा रहा है। गरीबों के बच्चों में उन्माद फैला रहा है और जन्नत की हूरों की लालीपाप दिखा सुरक्षा बलों पर पत्थरबाजी करवा रहे हैं। अब वो बुद्धजीवी पत्रकार रजत पर के अभिनेता असहिंष्णुता वाले कुंभकरणी नींद में क्यों सो रहे हैं?

आज बातचीत की बात कर सेना का मनोबल पुन: गिराया जा रहा है। हर प्रधानमंत्री ने अथक प्रयास किए हैं। वाजपेयी जी बस लेकर गए, पाकिस्तान ने कारगिल कर दिखाया। डा0 मनमोहन के व्यक्तिगत एक ही गांव की पृष्ठभूमि तथा गुजराल साहब ने हर प्रयास किया। वर्तमान प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के घर तक गए, उनकी माता जी की चरणवंदना तक की। अपने शपथ ग्रहण समारोह में बुलाया, क्या ये प्रयास नहीं थे? वहां से लगातार आतंकवादी घुसपैठ करवाई जा रही है, जिनका प्रशिक्षण, हथियार और धन-बल पाकिसतान सेना द्वारा दिया जा रहा है। परिणिती कभी मुबंई, दिल्ली, गुरदासपुर, पठानकोट, कश्मीर, कारगिल हो रही है।

–शेष पेज 2 पर

जाट लहर के पाठकों को दीपावली की शुभकामनाएं

’k"k i`t &1

चीन अपनी विस्तारवादी नीतियों पर कार्यवाही कर रहा है। पाकिस्तान के साथ एक समझौता कर पाक अधिकृत कश्मीर, बलूचिस्तान के रास्ते एक कारीडोर बना रहा है। बिना शक इसका कुछ लाभ तो पाकिसतान को मिलेगा लेकन वास्तविकता कुछ और है। आज उसे अरब सागर और प्रशांत महासागर में आने हेतू लंबा रास्ता तय करना पड़ता है जिससे उसका व्यापार प्रभावित हो रहा है। इस कारीडोर से उसे अरब सागर में सीधा रास्ता और भारत के लिए खतरे की घंटी बन जाएगा।

भारत-पाकिस्तान में मध्यस्तता का प्रस्ताव संयुंक्त राष्ट्र संघ के महा सचिव बान की मून ने तो दिया है- आज तक उनकी संस्था ने ज़्या किया? मामला 1947 से उनके पास है और 1965 के युद्ध के बाद रूस ने मध्यस्था की, भारत को ज़्या मिला? आज पाकिस्तान को अलग-थलग करने हेतू विश्व जनमत बना है। गर्म लोहे पर चोट करना ही हितकर होगा अन्यथा और कितने वर्ष तक पूर्व की इस गलती का परिणाम भुगतान करना होगा।

आज पाकिस्तान पर पांच मुद्दों पर कार्यवाही नितांत जरूरी है - पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में असंतोष का उपयोग कर कश्मीर खाली करवाने का दबाव बनाना, बलुचिस्तान से खैबर पज़्तूनवा सिंध का असंतोष और मानवाधिकार को अंतर्राष्ट्रीय मुद्दा बना पाकिस्तान को नंगा करना, विश्व से अलग थलग कर अलगाववादी और आतंक का जनक देश घोषित करना, सैयद हाफ़्जि जैसे अन्य आतंकी नेता और आतंकी प्रशिक्षण कैंप की पाकिस्तान में उपस्थिति, इसके लिए एक अच्छा हथियार साबित होगी जो सैनिक और आर्थिक घेरेबंदी से संभव है। सर्जिकल करवाई सराहणीय है और जिसके लिए सेना की पीठ थपथपानी जरूरी है।

चाणज़्य ने कहा था -राजन, सेना के परिवारों की देखभाल करो, उनके कुशलक्षेम की चिंता करो- अंतर्राष्ट्रीय सीमाएं पूर्णतया स्वतः सुरक्षित हो जाएगीं। आज हमारे बावू, भारतीय प्रशासनिक सेवाओं वाले सत्ता पर भारी हैं जिससे सेना में असंतोष है। सेनाओं में 14 हजार अधिकारियों की कमी है जो कि दिन प्रति दिन बढ़ रही है। सेना के पास साजो समान की कमी है, पड़ोसी देश चीन हम पर भारी है और पाकिस्तान उसकी शह पर लगातार छदम स्थिति पैदा किए हुए है। विडंबना है कि भारत के साथ वह पांच लड़ाईयां लड़ चुका है और हर बार शर्मनाक हारे, फ़्रि भी पाक सेना अपनी बेशर्मी और झूठा मीडिया से पाक जनता को गुमराह कर रही है। सेना का वहां की राजनीति पर बर्चस्व है तथा मनमानी करवा रही है। पाक सरकार कुत्ते के दूम का रवैया अपनाए हुए है, अगर भारत सरकार ने भी अपने बाबूओं पर अंकुश नहीं लगाया तो यहां भी परिणाम सुखद होने के आसार नहीं हैं।

आंतरिक सुरक्षा के खतरे राष्ट्र में लगातार बढ़ते जा रहे हैं। देश के बहुत से हिस्सों में कोढ़ की तरह फ़्ैल रहा नकसलवाद आज भी जिंदा है। शिक्षा संस्थाएं भी इनके प्रभाव से अछूती नहीं हैं, जहां राजनीति और नकसलवाद का नंगा नाच हो रहा है। तक्षशिला तथा नालंदा जैसे विश्वविज़्यात शिक्षा मंदिरों, खाप पंचायतों के न्याय और गांव-गांव को गुरूकुल शिक्षा देने वाली संस्कृति आज किस ओर अग्रसर है? मैकाले ने हमारी संस्कृति पर अटैक किया और हमारी शिक्षा और न्यायिक व्यवस्था को अंतर्राष्ट्रीय ज़्याति से धूल चटा दी। आज देश के हर कोने में गरीबी और बेरोजगारी है। युवा पीढ़ी नशों से ग्रस्त है, जिसके लिए सत्ताधारी राजनैतिक दलों और प्रशासन की जबाबदेही बनती है। आज का नवयुवक आराम व ऐश का जीवन व्यतीत करना चाहता है लेकिन संसाधनों की कमी और कुछ ना करके विलासिता तो केवल अपराध जगत से ही मिल सकती है जो वर्तमान में फ़्ल-फ़ूल भी रहा है। राजनीति में भी अपराधियों की संज़्या दिन-ब-दिन बढ़ रही है जिससे कोई पार्टी अछूती नहीं है। रिश्वतखोरी दिन प्रति दिन बढ़ रही है ज़्योंकि निजाम हमें उसी का सबक दे रहा है। जातीय, धार्मिक, आर्थिक हर तरह के अपराध के साथ-साथ साईबर अपराध भी प्रगति पर है। लूट-खसोट, राहजनी, चोरी अब पेशा बन गया है और इन्हे राजनैतिक संरक्षण उपलज़्ध है। सुरक्षा बल आंतरिक और बाहरी दोनों फ्रंट पर उलझे हुए हैं और सरकारों में आका नीरो चैन की बंसी बजा रहा है। एक मुद्दा खत्म होते ही नया शुरू करवा देते हैं। देश की बाहरी सुरक्षा पर खतरे के साथ साथ आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था पर भी खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। इस अवस्था के लिए मुज़्य रूप से राष्ट्र में अंदरूनी बढ़ती हुई सांप्रदायिक व जातीय हिंसा, जेहादी उग्रवाद, उत्तर-पूर्वी राज्यों में बढ़ती हुई अलगाववाद की भावना, माओवाद, राष्ट्रीय भावना का अभाव, न्यायिक अव्यवस्था, बढ़ती हुई बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, आर्थिक असमानता, नेताओं की दलगत वोट की राजनीति उत्तरदायी है। देश की बाहरी सीमाओं में पड़ौसी राज्यों -पाकिस्तान, बंगलादेश, चीन, नेपाल, श्रीलंका आदि से हो रही लगातार अनगिनत असामाजिक व जेहादी तत्वों की अवैध घुसपैठ, बेहतर संबंधों के नाम पर चीन द्वारा किया जा रहा भीतरघात, भारतीय समुद्री मार्ग तट व इसके आस पास के इलाकों से हो रही अवैध घुसपैठ व तस्करी से भी राष्ट्र की बाहरी सुरक्षा के साथ-साथ अर्थव्यवस्था की स्थिति बिगड़ती जा रही है।

कुछ दशक पूर्व बंगाल के एक गांव से शुरू हुआ नज़्सलवाद का

तांडव आज राष्ट्र के 16 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में फैल चुका है। अब बात केवल बंगाल तक ही सीमित नहीं रही, आंध्रप्रदेश, ओडिसा, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तराखंड, छतीसगढ़, बिहार, तामिलनाडू, उत्तरप्रदेश जैसे राज्यों में भी अपने पांव जमा चुका है। इसमें कभी कोई दो राय नहीं है कि किसी समस्या का निदान कभी बंदूक की नाल से नहीं निकलता। निदान के लिए जरूरी है कि समस्या की जड़ तक जाया जाए, भटके नवयुवा को राहे रास्ते लाने के लिए उसे रोजगार के अवसर, न्याय, विकास की सीढ़ी उपलज्ध करवाकर मानवता का रास्ता दिखाया जाए लेकिन हमारे राजनैतिक दल स्वार्थवश ऐसा नहीं होने देते। स्वच्छंद नव युवाओं, जिनका विवेक पहले ही मर चुका है, उन्हे जाति पाति, धर्म, क्षेत्रीयता के नाम पर गुमराह कर उन्हे अपने मतलब के लिए बहकाया,फुसलाया जाता है। यहां तक कि राजनैतिक सत्ता भी जातिवाद व धार्मिक भेदभाव से हासिल करने का प्रयास किया जा रहा है। राष्ट्र की राजनैतिक सत्ता में ज़ी आतंक का इस्तेमाल बढ़ता जा रहा है। राष्ट्रीय क्राईम ज्यूरौ की रिपोर्ट के अनुसार राष्ट्र में वर्ष 2013 में 101 राजनैतिक कत्ल हुए जिसमें सबसे ज्यादा 26 पंश्चिमी बंगाल, मध्यप्रदेश से 22 और बिहार से 12 हत्याएं हुई।

राष्ट्र में हो रही जातीय/सांप्रदायिक हिस्सा व दंगों से भी आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था प्रभावित हो रही है। जातीय मतभेद व राष्ट्रीयता की भावना के अभाव में जज़्मु काश्मीर, महाराष्ट्र, गुजरात जैसे क्षेत्रों में अल्पसंज्यक वर्ग में सिया-सुन्नी के जातीय झगड़े होते रहते हैं जिसको पाकिस्तानी कट्टर संगठनों व वोट की दलगत राजनीति का पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है। राजनैतिक हस्तक्षेप भी सुरक्षा बलों को अक्षम बना रहा है जिस कारण शासक दलों के राजनीतिज्ञों द्वारा अपने नीहित स्वार्थों के लिए सेना तथा सुरक्षा बलों पर विपरीत आरोप लगाए जा रहे हैं। अकेले जज़्मु कश्मीर में सुरक्षा बलों के खिलाफ विभिन्न आरोपों की काफी शिकायतें दर्ज करवाई गई जिसमें से जांच के बाद अधिकतर शिकायतें झूठी पाई गई। नेताओं द्वारा अपने स्वार्थ के लिए इस प्रकार की सुरक्षा बलों की कार्यवाही पर की जाने वाली उटपटांग बयानबाजी, बेवजह फैलाए जा रहे जातिवाद व धार्मिक कट्टरवादी टिप्पणियां भी राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा उत्पन्न कर रही हैं।

राष्ट्र के खुफिया तंत्रों के अनुसार नज़्सलियों के लश्करे-तोएबा तथा अन्य इस्लामी आतंकवादी संगठनों से संबंध बढ़ते जा रहे हैं और चीन का पूर्ण संरक्षण प्राप्त है तथा पशुपति से तिरूपति तक रैड-कारीडोर स्थापित करने की चीन की मंशा है। पाकिस्तान की आई एस आई इन्हे पूरा सहयोग दे रही है। यही नहीं नज़्सलवादी हर हमले के बाद मजबूत और घातक बनते जा रहे हैं। अकेले जज़्मु कश्मीर में वर्ष 2000 से लेकर 2006 तक विभिन्न बंब विस्फोटों तथा आतंकी हमलों में 226 नागरिक व सुरक्षा कर्मी मारे गए और 150 से भी अधिक गंभीर रूप से जज़्मी हुए। गत वर्ष से लेकर 47 सुरक्षा सैनिकों व 108 आतंकवादियों सहित 190 से अधिक व्यक्ति आतंकी हमलों में मारे गये। प्रदेश की मुज़्यमंत्री एवं गृह मंत्री महबूबा मुज़्ती ने स्वयं माना है कि 15 जनवरी 2015 से 15 जनवरी 2016 तक एक वर्ष के अंदर आतंकवाद से संबंधित 146 वारदात हुई जिसमें 108 आतंकवादी 39 सुरक्षा सैनिक व 22 नागरिकों सहित 169 व्यक्ति मारे गये। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के लगते कुपवाड़ा, बारामुला व बांदीपोरा जिलों में दक्षिणी कश्मीर की अपेक्षा आतंकी घटनाओं में दोगुने व्यक्ति मारे गये हैं और इन आतंकी हमलों में पाकिस्तान की हर गतिविधि जगजाहिर होने पर भी प्रदेश सरकार कार्यवाही नहीं करती है।

8 जुलाई को खतरनाक आतंकवादी संगठन हिजबुल मुजाहिद्दीन के कमांडर बुरहान बानी की मौत के बाद हुए हिंसक हमलों में 3 मास के अर्से में 2 पुलिस कर्मियों सहित 94 लोगों की अपनी जान गवांनी पड़ी और करीब 14 हजार नागरिक भी घायल हुए। अनेकों निर्दोष एवं मासूम लोगों को ज़ी हिंसा का शिकार होना पड़ा। कई बच्चो को अपनी आंखों की रोशनी गवानी पड़ी। हिंसक हमलों में राज्य पुलिस ने 2300 अपराधिक मामले दर्ज करके करीब 7000 शरारती तत्वों को गिरफ्तार किया और घाटी को इस अर्से में करीब 10 हजार करोड़ रूपये का नुकसान झेलना पड़ा। प्रांत में हिंसा लगातार जारी है जबकि 95 प्रतिशत लोग हिंसा के विरोधी हैं। अतः पाकिस्तार के विरूद्ध और भी आक्रामक कदम उठाने की जरूरत है।

जज़्मू कश्मीर जैसे बूरी तरह आतंक से प्रज़ावित इलाकों में सुरक्षा बलों को दोहरी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। एक ओर सुरक्षा बलों को स्थानीय जनता का समर्थन नहीं मिल रहा है तो दूसरी ओर आतंकी संगठनों द्वारा लगातार हमले किए जा रहे हैं। पुलिस सुत्रों के अनुसार बुरहान बानी पर की गई कार्यवाही से पहले दक्षिण कश्मीर क्षेत्र में 70 से कम स्थानीय आतंकवादी सक्रिय थे, जिनकी संज़्या बाद में बढ़कर दोगुनी हो गई। केंद्रीय कश्मीर में हिजबुल मुजाहीदीन के कथित कमांडर शेख अबास के ग्राम रामपुर के 80 युवाओं मे से कम से कम 40 युवा मुजाहीदीन आतंकी संगठन में शामिल होने को तैयार हैं। यह सब स्थानीय जनता का सुरक्षा बालें व पुलिस से तालमेल स्थापित ना होने के कारण हो रहा है। यही कारण है कि बुरवानी मुठभेड़ की घटना के बाद घाटी में 31 अगस्त से 17 अज़्तूबर 2016 तक 7 बड़े आतंकी हमले किए जा चुके हैं, जिनमें पुलिस के जवानों से काफी हथियार लूट लिए गए।

वर्ष 2008 में तत्कालीन राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री एम.के. नारायन की रिपोर्ट के अनुसार राष्ट्र में लगभग 800 आतंकी यूनिट अपनी कार्यवाही में लगे हैं। अकेले वर्ष 2012 में भारत में 231 निर्दोष नागरिक आतंकी कार्यवाही में मारे गये जबकि समूचे विश्व में इसकी संज़्या 11098 है। जुलाई 2016 को भारत सरकार द्वारा जारी किये गये आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2005 के बाद आतंकी हिंसक घटनाओं में 707 व्यक्ति मारे गए जबकि 3200 से अधिक जज़्मी हुए। ग्लोबल टैरोरिसम इंडैज़्स-2015 के तीसरे एडीसन की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2014 में विश्व के आतंकवाद से सबसे अधिक प्रभावित 162 देशों में भारत छठे स्थान पर आस्ति है और आज भी भारत का नाम आतंकवाद से प्रभावित राष्ट्रों में 10वें स्थान पर आता है। जोकि गंभीर समस्या है।

राष्ट्र में जज़्मू-कश्मीर के बाद यूपी इस्लामिक आतंकवाद का मुज़्य स्रोत बनकर उभर रहा है। राष्ट्र में कहीं भी बम ज़्लास्ट होता है, छानबीन के पश्चात उसका उदगम स्थान यूपी में ही निकलता है। वर्ष 2000 से हुये राष्ट्र में 54 मुज़्य आतंकी हमलों में से कम से कम 45 का सीधा संपर्क यूपी से था जिनमें 14 बम ज़्लास्ट थे। प्रदेश में असंज़्य अशिक्षित व बेरोजगार नवयुवकों की भागीदारी से आतंकवाद का व्यवसाय तीव्र गति में बढ़ रहा है।

ईश्वर, मूर्तियों में नहीं, आपकी भावनाओं में है और आत्मां आप का मंदिर है। –चाणक्य

इस समय घर में बैठे आतंकवादियों को नंगा कर जड़ से सफाया करना जरूरी है तथा भारत के स्कूलों-कालेजों में पढ़ाई के साथ-साथ युवाओं को इजराईल, चीन, जर्मनी, आस्ट्रिया, स्विटजरलैंड की तरह सैन्य प्रशिक्षण अनिवार्य करन के साथ-साथ बाबूओं को कुछ अवधि हेतू विषम स्थिति वाले अग्रिम मोर्चा में रहना अनिवार्य करना होगा ताकि उन्हे सेना को आ रही दिक्कतों से अवगत करवाया जा सके। सामाजिक सदभावना हेतू राजनैतिक पहल की जरूरत पर बल भी नितांत जरूरी है। सर्जीकल कार्यवाही एक चेतावनी मात्र है ताकि पाकिस्तान सुधर सके लेकिन इसकी संभावना कम ही है। जिस न्यूकलीयर बंब की वह धमकी दे रहा है, उसे चलाना आसान नहीं है। हीरोशिमा और नागाशाकी पर फैंके गए 'लिटल ज़्वाय' और 'फैट ज़्वाय' न्यूकलीयर खिलौने थे, जिसकी परिकल्पना की जा सकती है कि आज के युग में तबाही का मंजर ज़्या होगा? अब वर्तमान में रूस के साथ सैन्य समझौते में एक साथ 35 आयुद्धों को नष्ट करने की क्षमता वाले हथियारों के साथ भारत की मारक क्षमता विश्व की अग्रणीय सेनाओं में शुमार है। ज़ारत का तो कुछ हिस्सा ही जाएगा लेकिन पाकिस्तान का विश्व मानचित्र से नाम खत्म हो जाएगा। एक मजहब की बात पर जनता को गुमराह किया जा रहा है। बंगला देश अलग हो गया। ईरान-ईराक, अफगानिस्तान साथ नहीं जो उसी मजहब से हैं। वे भूल रहे हैं कि पाकिस्तान से ज्यादा मुस्लिम भारत में हैं जो पहले भारतीय हैं, बाद में कुछ और। वैसे भी भारतीय मुस्लिमों की स्थिति उनसे बहुत बेहतर है, ना जाने फिर भी वह कौन सा मुगालता अपनाए हुए है और ज़्यों? अगर वह भारत के साथ दोस्ती का हाथ बढ़ाए तो दोनों देशों के लिए हितकर होगा और पाकिस्तान भी विकासशील देशों में शुमार हो सकता है लेकिन अड़ियल रवैया उसे छोड़ना होगा। सेना और झूठे मीडिया पर लगाम लगाना होगा, जो शायद संभव नहीं है।

राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा बलों, अखंडता व आन बान को बनाए रखने के लिए संघर्षरत सुरक्षा बलों व सैन्य कर्मियों के कल्याण व विकास हेतू राष्ट्रीय नीति बनाई जानी चाहिए। इसके साथ ही राष्ट्र की सुरक्षा, अखंडता के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले शहीदों व उनके आश्रितों के सज़्मान व कल्याण के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सज़्मानजनक नीति निर्धारित की जानी चाहिए ताकि राष्ट्रीय व सीमा पार की सुरक्षा में लगे हुए सुरक्षा बलों एवं अलगाववादियों व आतंकवादियों से विषम परिस्थितियों में मुकाबला कर रहे सुरक्षा सैनिकों में आत्मविश्वास, स्वच्छंदतता, आत्मनिर्भरता व आत्म सज़्मान की भावना कायम रखी जा सके ज़्योंकि शहीदों के सज़्मान से ही सुरक्षा बलों का सज़्मान बढ़ता है। यह सर्वविदित है कि जिस कौम एवं समाज में बुजर्गों का सज़्मान नहीं होता वह समाज कभी प्रगति नहीं कर सकता और जिस राष्ट्र में सैनिकों का सज़्मान न हो वह राष्ट्र कभी सुरक्षित नहीं रह सकता। इसलिए आज राष्ट्र को अवसरवादी, भ्रष्ट व अव्यवस्थित तंत्र के मायाजाल से बचाने के लिए देश की आंतरिक सुरक्षा को सुदृढ़ किए जाने की आवश्यकता है। इसके साथ ही आज के नेताओं की दलगत व स्वार्थ से ग्रस्त अवधारणा में बदलाव व राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे अहम मुद्दों पर निष्पक्ष सहयोग की नितांत आवश्कता है।

डा0 महेन्द्र सिंह मलिक
आई.पी.एस., सेवानिवृत,
प्रधान जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

सांझी का गीत

छोरी माट्टी ल्याया करती
मुह अर हाथ बणाया करती
गोबर तै चिपकाया करती
कंठी कडले पहराया करती
आखं मैं स्याही लाया करती
चूंदड़ भी उढ़ाया करती
नू सांझी नै सजाया करती
रोज सांझ नै आया करती
गीत सांझ नै गाया करती
घी मै मिट्ठा मिलाया करती
नूं सांझी नै जीमाया करती
सांझी का फेर आया भाई
अगड़ पड़ोसन देखण आई
कट्ठी होकै बूझै लुगाई
सांझी तेरे कितने भाई
फेर सांझी की होई विदाई
छोरी छारी घालण आई

हांड़ी के म्हा सांझी बैठाई
गैल्या उसका करदिया भाई
छोरी मिलकै गाया करती
हांड़ी नै सजाया करती
एक दीवा भी जलाया करती
फेर जोहड़ मैं तिराया करती
हम भी गैल्या जाया करते
जोहड़ मै तिराया करती
हम भी गैल्या जाया करते
जोहड़ मै डले बगाया करते
सांझी नै सताया करते
फोड़ कै हांड़ी आया करते
ईब गया जब गाम मै भाई
सिमेंट टाईल अर नई पुताई
सारी भीत चमकती पाई
पर किर्त ना दिखी सांझी माई
... कितै ना दिखी सांझी माइ

घटता लिंगानुपात : गायब होती बेटियां

– डॉ0 ज्ञान प्रकाश पिलानियां, जयपुर

लिंगानुपात के मामले में भारत की स्थिति शर्मनाक है। ज्ञातव्य है कि पूर्व गर्भाधान और प्रसव पूर्व निदान तकनीक कानून 1994 में बनाया गया था। इसके तहत भ्रूण हत्या रोकने और लिंग परीक्षण पर प्रतिबन्ध लगाया गया, पर इस कानून के क्रियान्वयन के दो दशक बीतने के बाद भी स्थिति बद से बदतर हो रही है। लिंगानुपात में गिरावट जारी रही। वर्ष 2001 में प्रति एक हजार लड़कों (0–6 वर्ष) पर 927 लड़कियां थीं। 2011 में स्थिति खराब हुई और यह अनुपात 918 हो गया। इससे यह प्रतीत होता है कि भ्रूण परीक्षण से जुड़े कानून का सही तरीके से क्रियान्वयन नहीं हो पाया। आंकड़े यह दर्शाते हैं कि एक तरफ लिंगानुपात निरंतर गिर रहा है, तो दूसरी तरफ लिंग परीक्षण के मामले सामने आने के बावजूद आरोप सिद्ध नहीं होने से सजा का प्रतिशत बहुत कम है। स्वास्थ्य मंत्रालय के आंकड़ों को देखें तो वर्ष 2011 से 2013 के दरम्यान गर्भस्थ शिशु का लिंग परीक्षण कराने के 563 मामलों की खबर आई, लेकिन पूरे देश में केवल 32 लोगों को ही सजा मिल पाई। पंजाब में बाल लिंगानुपात 1000 लड़कों की तुलना में 895 लड़कियों का है। यहां 52 मामले आए और दो मामलों में ही आरोपी दोषी करार दिए गए। पंजाब से सटे हरियाणा में तो हालात बेकाबू हैं। यहां लड़कियों की संख्या 1000 लड़कों की तुलना में 879 है। यहां भी लिंग परीक्षण के 54 मामले सामने आए, पर किसी को भी दोषी नहीं ठहराया गया। इसी प्रकार दिल्ली में 10 मामले दर्ज हुए, लेकिन कोई दोषी करार नहीं दिया गया। दमन और दीव में प्रति एक हजार लड़कों की तुलना में 618 लड़कियां हैं। चंडीगढ़ जो कि एक नियोजित और सभ्य शहर माना जाता है, वहां भी एक हजार पर 818 लड़कियां हैं। इसका तात्पर्य तो यही हुआ कि शिक्षित परिवारों में भी लड़का–लड़की में भेदभाव में कोई कमी नहीं आई हैं। यह स्थिति बदलने के लिए लोगों की मानसिकता में परिवर्तन जरूरी है। लोगों को समझाना होगा कि लड़के और लड़की के बीच भेद करने का कोई औचित्य नहीं हैं।

किसी भी सभ्य समाज का आकंलन हम उसके शिशु लिंग अनुपात से भी लगा सकते हैं। ऐसे में इस समानुपात में निरन्तर आती हुई कमी बहुत दुखदायी स्थिति है। कभी देश में सन् 1961 में यह अनुपात 1000 पर 976 था जो 2011 की जनगणना के अनुसार घट कर मात्र 918 रह गया, जो एक शर्मनाक कलंक है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राष्ट्र में (6 वर्ष तक की आयु वर्ग में) लड़कों की संख्या 100 लड़कियों के पीछे 108 थी और यह संख्या इसी आयु वर्ग में हरियाणा में 120, पंजाब में 118, उत्तराखण्ड में 115, जम्मू कश्मीर में 116 व गुजरात में 111 प्रति 100 आंकी गई हैं। यह दुखद है कि अशिक्षित व निम्न वर्ग ही नहीं उच्च व मध्यम वर्ग में लिंग भेद निर्धारण और कन्या भ्रूण को खत्म करने की प्रवृत्ति निरंतर तेजी से बढ़ती जा रही है। एक विकासशील समाज में ऐसी प्रवृत्तियां निदंनीय है, जिसमें शिशु के लिंग के आधार पर उसका जीवन निर्धारण किया जाता है। यदि यह पता पड़ जाता है कि भ्रूण पुरूष नहीं है तो उसे निर्दयता पूर्वक नष्ट कर दिया जाता है। हर साल लाखों बच्चियां कौख में ही मौत के घाट उतार दी जाती हैं।

राजस्थान के जनगणना निदेशालय के सैंपल रजिस्ट्रेशन सिस्टम (एसआरएस) की जारी हुई 2013 की रिपोर्ट में यह खुलासा हुआ है कि बेटी बचाने की राजस्थान सरकार की तमाम मुहिम बेअसर साबित हो रही है। प्रदेश में लगातार बेटियों की संख्या में गिरावट आ रही है। एसआरएम की रिपोर्ट के मुताबिक प्रदेश में एक साल में बाल लिंगानुपात में 10 पॉईट की गिरावट हुई है, जो प्रदेश के लिए चिंता का विषय है। इस रिपोर्ट के मुताबिक राजस्थान में बाल लिंगानुपात (0–4 वर्ष) 882 से घटकर 874 पर आ गया है। वर्ष 2012 की रिपोर्ट में 1000 बच्चों पर बेटियों का अनुपात 882 है।

ज्ञातव्य है कि देश में बालिका, लिंगानुपात सुधारने के लिए बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं अभियान की 100 जिलों में शुरूआत की गई थी, जिसमें राजस्थान राज्य के 10 जिलों को भी शामिल किया गया। अब राज्य के चार और जिलों को इसमें जोड़ा गया हैं। इसमें हर जिले को बालिका लिंगानुपात में 10 अकों की बढ़ोतरी करनी थी। अभियान के तहत इन जिलों को एक–एक करोड़ रूपये की राशि दी गई है। विडबंना है कि 10 जिलों (जयपुर, अलवर, भरतपुर, दौसा, धौलपुर, श्रीगंगानगर, झूंझनूं करौली, सवाई माधोपुर, सीकर) में केवल दो जिलों में ही बालिका लिंगानुपात में सुधार आ सको। जयपुर सहित 8 जिलों में पिछले साल से घटा है, बालिका लिगांनुपात। सिर्फ श्रीगंगानगर और झूंझनूं में ही 9 से 16 अंक तक की वृद्धि दर्ज की गई है। लिंगानुपात में कमी एक बड़ी समस्या है जिस पर गंभरता से विचार करने की जरूरत है। चिंताजनक बात यह है कि इस अभियान के बाद भी राजधानी समेत आठ जिलों में लिगांनुपात और बिगड़ा है। जाहिर है यह अभियान अभी जनता से नहीं जुड़ पाया है।

8 जिलों की स्थिति की बात करें तो जिलों में 9 से 16 अंक तक वृद्धि दर्ज की गई है। इन आठ जिलों में सवाई माधोपुर एक ऐसा जिला है, जहां सबसे ज्यादा कमी आई है। यहा 32 अंकों की कमी देखी गई है। 2014–15 में लिंगानुपात 945 था जो 2015–2016 में घट कर 913 हो गया। एक एनजीओ की ओर से किए गए अध्ययन के अनुसार अलवर में वर्ष 2014–15 में 915 लिंगानुपात था, जो वर्ष 2015–16 में तीन अंक घट गया। वहीं राजधानी जयपुर में जीवित जन्म शिशु दर पर बालिका लिंगानुपात में आठ अंकों की गिरावट आई है। 2014–15 में 912 लिंगानुपात था, जो 2015–16 में घटकर 904 रह गया। करौली में 2014–15 में लिंगानुपात 943 था, जो 17 अंक घटकर 2015–16 में 926 हो गया। दौसा और भरतपुर में भी 11–11 अंक घट गए। हमें लिंगानुपात असंतुलन की चिंता करनी होगी। प्रसव पूर्व निदान की तकनीक (विनियमन और दुरूपयोग)

मूर्ख अपने घर में पूजा जाता है, मुखिया अपने गांव में पूजा जाता है, राजा की पूजा अपने राज्य में होती है, परंतु विद्वान सर्वत्र पूजा जाता है। –चाणक्य

मानसिक तनाव - एक बड़ी समस्या

-श्रीमती उषा मंदार कुलकर्णी कनिष्ठ लिपिक वैमनीकॉम, पुणे

सुबह समाचार पत्र पढ़ने के लिए हाथ में लेते ही रोज कोई न कोई आत्महत्या करने की घटना छपी रहती है। यह खबर पढ़ते ही मन खिन्न हो जाता है और सोचने के लिए मजबूर कर देता है कि आजकल ऐसी घटनाएं क्यों हो रही हैं। आत्महत्या करने के लिए जीवन में असुरक्षितता की भावना एक मुख्य कारण हो सकता है। इतना ही नहीं मानसिक तनाव भी एक मुख्य कारण है। जिसकी वजह से शारीरिक और मानसिक बिमारियों से गुजरते हैं। आधुनिक जीवन में समस्याएं बढ़ रही हैं जिसका एक कारण लाईफ स्टाईल भी है। आज का समाज व्यापक स्तर पर तनावग्रस्त होता जा रहा है। जिस तरह प्राकृतिक वातावरण में प्रदूषण बढ़ रहा है, उसी तरह सामाजिक वातावरण को मानसिक तनाव प्रदूषित कर रहा है।

मानसिक तनाव किसी भी स्तर का हो चाहे वह सामाजिक एवं सामूहिक कारण से हो अथवा व्यक्तिगत कारण से हो, तनाव से ग्रस्त व्यक्ति इससे मुक्त होने के उपाय खोजता है या विवश होकर स्वयं को इसके आगे समर्पित कर देता है तथा आत्महत्या करने के लिए मजबूर हो जाता है। शारीरिक रोग के लिए वैद्य उपचार कर सकता है लेकिन मानसिक के लिए खुद को भी उतना ही समर्पित करना पड़ता है।

बच्चों के तनाव युवकों के तनाव से तथा युवकों के तनाव वृद्धों के तनाव से भिन्न होते हैं। बच्चों के तनाव कुछ माँ–बाप का प्यार न मिलना, उनमें झगड़े की वजह से बच्चों पर गुस्सा निकालना, बच्चों में भेदभाव करना तथा माँ–बाप का तलाक इत्यादि कारण हो सकते हैं। युवकों को आर्थिक चिंता के कारण घर में तनाव बने रहना, वृद्धों को उनके बच्चे न संभालना, वृद्धाश्रम में डालना। अगर बच्चे ठीक से अपने पाँव पर खड़े न रहने तथा उनके व्यवहार ठीक न होने पर तनाव बढ़ जाता है।

युवा उच्च शिक्षा प्राप्त करके डॉक्टर, इंजीनियर बनकर धनोपार्जन कर सुख–सुविधा युक्त जीवन निर्वाह करना चाहते हैं परन्तु जब उनका उद्देश्य पूर्ण नहीं हो पाता तो उनका मन असंतुष्ट हो जाता है और मानसिक संतुलन गड़बड़ा जाता है। शिक्षा से प्राप्त उपलब्धियां उन्हें निरर्थक प्रतीत होती हैं। वर्तमान युग में लड़का हो या लड़की, सभी स्वावलम्बी होना चाहते हैं, मगर बेरोजगारी की समस्या हर वर्ग के लिए अभिशाप सा बन चुकी है। मध्यम वर्ग के लिए तो यह स्थिति अत्यंत कष्टदायी होती है। इतना ही नहीं जो युवा वर्ग नौकरी कर रहे हैं वहाँ पर भी जिम्मेदारियों की वजह से मानसिक तनाव बढ़ रहा है।

वरिष्ठ लोगों में भी मानसिक तनाव मुख्य समस्या नई–पुरानी पीढ़ी के बीच अंतर, धन न होने की वजह से बच्चे न संभालना इत्यादि कारण है। इन प्रसंगों से उनको अकेलापन महसूस होता है जिससे भी वे मानसिक संतुलन खो बैठते हैं। इससे मानसिक तनाव, पेनिक डिसआर्डर, फोबिया, डिप्रेशन, ब्लड प्रेशर, डाईबिटिज आदि हो जाते हैं। जब आप किसी कार्यक्रम में व्यस्त हों और किसी समस्या का सामना करना पड़ता है जैसे दोस्त के साथ जिम्मेदारियां या आपके पास ज्यादा काम के भार का सामना करना पड़ता है। जब तनाव सीमा पार कर जाती है तब मानसिक संतुलन बिगड़ता है और इसका शरीर पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है। इससे मस्तिष्क में पाए जाने वाले रसायनों का बढ़ना या घटना, अत्यधिक तनाव, कोई बड़ा हादसा आदि हो सकते हैं। तनाव के कुछ लक्षण हैं जैसे डर लगना, घबराहट होना, हृदय गति तेज होना, निरंतर चिंतित रहना, एकांत वातावरण में रहना, नकारात्मक सोच बने रहना इत्यादि।

विशेषकर वृद्धों की आर्थिक समस्या कम करने के लिए और अकेलेपन की भावना इत्यादि को कम करने के लिए वृद्धों के लिए स्वयं सहायता समूह विकसित किए जाने चाहिएं जिससे उन्हें आर्थिक सहायता मिलेगी। उनके अनुभव का उपयोग होगा और उन्हें अकेलापन भी नहीं खलेगा। आजकल बढ़ते हुए मानसिक तनाव को ध्यान में रखते हुए कम्पनियां भी स्टाफ का मानसिक तनाव कम करने के लिए पार्टी तथा ट्रिप की व्यवस्था करते हैं तथा योगासन करवाने इत्यादि का प्रयास करते रहते हैं। कम्पनियों में सौंदर्य प्रतियोगिता, खेलकूद प्रतियोगिता, सांस्कृतिक कार्यक्रम, नृत्य–संगीत जैसे कार्यक्रमों का आयोजन वर्ष में दो–चार बार होता रहता है।

मानसिक तनाव से बचने के लिए यह भी ध्यान रखना चाहिए कि सत्य कभी भी नष्ट नहीं हो सकता है। यदि आप सत्य की राह पर हैं तो किसी भी परिस्थिति में चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। दूसरे व्यक्तियों के जीवन में प्रसन्नता तथा शांति लाने की कोशिश से आपको बहुत अधिक मानसिक सुख तथा शांति का अनुभव होगा। यदि आपको किसी प्रकार का तनाव होने लगे तो उसके बारे में सोचना बंद करना चाहिए तथा अपनी रूचि के विषय के सम्बन्ध में सोचना शुरू करना चाहिए। सदा हंसमुख रहने का प्रयास करना चाहिए। बच्चों के साथ खेलने से अथवा पुस्तकें पढ़ने के शौक से भी मानसिक तनाव कम हो जाता है। कभी–कभी शांतिदायक तथा मधुर संगीत सुनने या झूले पर भी बैठने से मानसिक तनाव दूर होने में मदद मिलती है। इतना ही नहीं सकरात्मक नजरिया रखना भी जरूरी है। रोज सुबह खुली हवा में टहल सकते हैं तथा व्यायाम, प्राणायाम, योगासन, शवासन, ध्यान तथा योग आदि क्रियाएं कर सकते हैं। कुछ सामाजिक कार्यों को भी अपना सकते हैं जिससे आप मानसिक समाधान पा सकते हैं और तनाव से दूर रह सकते हैं। मन को शांत रखने के लिए ईश्वर की प्रार्थना भी कर सकते हैं जिससे मानसिक तनाव दूर होने में मदद मिलती है। इसलिए कभी रोज के काम से हटकर आऊटिंग से भी मन का स्वास्टिक बढ़ाने में मदद मिलती है।

मानसिक तनाव कम करने की कोशिश करनी चाहिए। ऐसा करने से मात्र पूरा तनाव कम नहीं होता है, लेकिन तनाव को दूर करने की कोशिश तो जरूर कर सकते हैं। आशा है यह लेख आपके मानसिक तनाव कम करने में जरूर मद्दगार सिद्ध होगा।

उथल पुथलकारी युग में - प्रेरक प्रसंग

- मौनिका आर्या, मतलौडा, हिसार

उन्नति और प्रगति के इस दौर में एक ओर हमने बहुत कुछ खोया है और दूसरी तरफ बहुत कम पाया है। हमने भौतिकता के माध्यम से शिखरों को छू लिया लेकिन हम पतन की ओर ऐसे गिरे की नैतिकता पतन की पराकाष्ठा की ओर हमने अपना ध्यान दिया ही नहीं। संभव है कि हम भविष्य में इंसान भी न रह पाये और हैवान से भी बदतर होते चले जायें। ऐसे मैं देश में घटित निन्दित घटनाओं में व्यथित होकर ही कर रही हूं। भारतीय संस्कृति का उद्घोष ''मनुर्भव दैवं जनय'' अर्थात हे मानव तू दिव्य गुणों से युक्त मानव बन और दिव्य संतान को उत्पन्न कर कि तेरी आने वाली संतान भी चरित्रवान और दिव्यतापूर्व हो, दानव नहीं। इसी सोच के दृष्टिगत प्रेरक प्रसंग नीचे उल्लिखित हैं।

1. राष्ट्र की चिंता

एक बार समर्थ गुरु रामदास और शिवाजी दक्षिण भारत की गुप्त यात्रा पर जा रहे थे। बरसात का मौसम था, चलते–चलते रात घिर आई। रास्ते में एक नदी आई। नदी अपने पूरे उफान पर थी। उसे तैर कर पार करना खतरे से खाली नहीं था। पहले शिवाजी नदी में उतरने लगे। समर्थ गुरु ने उनहें रोक दिया और कहने लगे– शिवा पहले नदी मैं पार करूंगा, फिर तुम पार करना। शिवाजी भला कहां मानने वाले थे, वे बोल पड़े– ऐसा कैसे हो सकता है गुरुदेव। नदी को पहले मैं पार करूंगा फिर आप। गुरु जी भी जिद कर बैठे और शिष्य भी। आखिर गुरु जी को हार माननी पड़ी। शिवाजी के बाद गुरुजी ने भी नदी पार कर ली।

दूसरे किनारे पर पहुंचने के बाद गुरुजी ने शिवाजी से नाराजगी जाहिर करते हुए शिकायत की– शिवा आज पहली बार तूने मेरे अवज्ञा की है। ''मैं आपको पहले नदी में कैसे उतरने देता, गुरुदेव, यदि आप बह जाते तो।'' ''और यदि तू बह जाता तब?'' समर्थ गुरु ने पूछा तो शिवा ने अत्यंत नम्रता से उत्तर दिया– ''कोई बात नहीं गुरुदेव, आप कई अन्य शिवाओं का निर्माण कर लेते, लेकिन यदि आप बह जाते तो मैं एक समर्थ गुरु का निर्माण कभी भी नहीं कर पाता। राष्ट्र के लिए आपका जीवन मेरे जीवन से अधिक मूल्यवान है। अतः आज समर्थ गुरु रामदास जैसे गुरुओं की तथा शिवा जैसे शिष्यों की आवश्यकता है।

2. मैत्री – परस्पर विश्वास पर निर्भर

दूध ने पानी से कहा– ''बंधु! किसी मित्र के अभाव में मुझे सूना–सूना अनुभव होता है आओ, तुम्हीं को हृदय से लगाकर मित्र बनाऊं।'' पानी ने उत्तर दिया– ''भाई! तुम्हारी बात तो मुझे बहुत अच्छी लगी, पर यह विश्वास कैसे हो कि अग्नि परीक्ष के समय भी तुम मेरे साथ रहोगे।'' दूध ने कहा– ''विश्वास रखो। ऐसा ही होगा।'' और इस प्रकार दोनों में मित्रता हो गई। ऐसी मित्रता कि दोनों के स्वरूप को अलग करना कठिन हो गया। अग्नि नित्य परीक्षा लेकर पानी को जला देती है, पर दूध है कि हर बार मित्र की रक्षा के लिए अपने अस्तित्व की भी चिंता न करते हुए जलने को प्रस्तुत हो जाता है।

3. सही अर्थों में स्वामी भक्त कौन?

एक राजा के चार मंत्री थे। उनमें से तीन तो थे चापलूस। चौथा था दूरदर्शी और स्पष्टवक्ता। राजा मरा तो पहले मंत्री ने बहुमूल्य पत्थरों को स्मारक बनवाया। दूसरे ने उसमें मणि–मुक्ता जड़वाये। तीसरे ने सोने के दीपक जलवाये। सभी ने उनकी स्वामी–भक्ति को सराहा। चौथे मंत्री ने उस स्मारक के आस–पास घना बगीचा लगवा दियां तीनों की राशि बेकार चल गई। चोर चुरा ले गये, पर चौथे का बगीचा फल देता रहा। मालियों के कुटुम्ब पलते रहे और पथिकों को विश्राम करने तथा बनाने वाले का इतिहास पूछने का अवसर मिलता रहा।

4. पहले स्तर परख लो

लोमड़ी ने बैल से दोस्ती जमाई कि साथ–साथ खेत चरने चला करेंगे। लोमड़ी छोटी थी, जल्दी–जल्दी पेट भर लेती। बैल ने कहा– मैं भी पेट भर लूं, तुम खेत की मेड़ पर बैठकर चौकीदारी करो। लोमड़ी आना–कानी करने लगी। इतने में किसान आ गया और बैल की बुरी तरह पिटाई हुई।

5. तृष्ण अन्ततः अहितकार

एक कुत्ता मुंह में रोटी दबाये, नदी के किनारे–किनारे जा रहा था। उसे अपनी परछाई दिखाई दी। मन में आया कि इस पानी में चल रहे कुत्ते की रोटी भी क्यों न छीन ली जाये? वह आक्रमण के लिये पानी में कूद पड़ा और परछाई को काटने के लिये जैसे ही उसने मुंह खोला, वैसे ही मुंह की रोटी भी बह गई। इसे कहते हैं तृष्णा, जो पास में है उसे भूलकर और पाने की इच्छा रखने वाले का विपत्ति में फंसना।

जीवन की सार्थकता योग में नहीं है। उसकी सार्थकता अनुभव के द्वारा ज्ञान हासिल करने में है। –स्वामी विवेकानंद

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Smart Jat girl 27/5'3" B.Tech., M.Tech. Working as a P.O. in IDBI bank, Mother class 1 officer & father class 1 officer (Retd.). Avoid: Pannu, Gill, Dhull. Cont.: 09416865888
- SM4 Jat Girl (DOB 04.11.90)26/5'2" B.A.,B.Ed. from Chandigarh. Father Government Officer in HSIDC. Avoid Gotras: Hooda, Kundu, Bhanwala Cont.: 09729235545, E.mail: hooda1962@gmail.com
- SM4 Jat Girl (DOB 26.01.88) 28/5'3" M.Tech. Employed as Guest Lecturer in Govt. Polytechnic College, Nilokheri. Avoid Gotras: Malik, Siwach, Goyat. Cont.: 09215017770
- SM4 Jat Girl (DOB 17.02.90) 26.7/5'3" M.Tech. Employed as Programmer in Food & Supply Department , Karnal. Avoid Gotras: Malik, Siwach, Goyat. Cont.: 09215017770
- SM4 divorced issu-less Jat Girl (DOB 26.07.88) 28.2/5'4" M.A., B.Ed. (Geoinformatic). Father in Central Government. Employed as Project Assistant (Adhoc.) in Sc. & Tech. Department, Panchkula. Avoid Gotras: Dalal, Dahiya, Panwar. Cont.: 09416534644
- SM4 Jat Girl 25/5'5" B.D.S Employed in a reputed Pharma. Company in I.T. Park Chandigarh. Family settled at Chandigarh. Tri-city match preferred. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Sandhu. Cont.: 09779721521
- SM4 Jat Girl 28/5'2" B.A. & Diploma in Lab. Technician. Own private business at Sonepat. Avoid Gotras: Malik, Saroha, Khatri, Ahlawat. Cont.: 09466944284
- SM4 Jat Girl 23/5'3" M.B.A. Employed in MNC at Mumbai with Rs. 4.50 Lakh package PA. Father & Mother in Government job. Avoid Gotras: Mor, Nain, Gill. Cont.: 09872330397, 09915711451
- SM4 Jat Girl (DOB 18.10.84) 31.10/5'3" M.Com. Passed Computer Course. Avoid Gotras: Kadian, Malik, Khatri. Cont.: 09468089442
- SM4 Jat Girl (DOB18.8.88) 28/5'3.6" M.Sc (Math), B.Ed. Working in a reputed private School. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 09354839881
- SM4 Jat Girl 27.5/5'7" B.A. (Hons.) MA English, M.Phill. B.Ed. NET qualified, Employed as J.B.T.Teacher in U.T. Chandigarh. Avoid Gotras: Malhan, Kadian, Chahar. Cont.: 09467394303
- SM4 Jat Girl (DOB 05.09.91) 24.10/5'6" M.Tech (CSE) Employed in a University. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Rana. Cont.: 07696844991, 07814609118
- SM4 Jat Girl (DOB 20.09.91) 25/5'6" M.Tech (ESE) Avoid Gotras: Panwar, Deswal, Ahlawat. Cont.: 08053825053, 09813262849
- SM4 Jat Girl 25/5'2" B.Tech (CSE) Cleared S.S.C. Exam. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Joon. Cont.: 09780336094.
- SM4 Jat Girl (DOB 07.02.90) 25/5'10" B.Tech. (ESE) M.Tech (ESE) from M.D.U. Rohtak. GATE qualified. Avoid Gotras: Kadian, Rathee, Sangwan, Cont.: 08447796371
- SM4 widow issue less Jat Girl (DOB 02.10.80) 35.5/5'3" MSc., M.Phill, B.Ed. Employed as Junior Lecturer in Haryana Government. Avoid Gotras: Nandal, Sehrawat, Dalal. Cont.: 08570032764
- SM4 Jat Boy (DOB 04.12.90) 25.11/6' B.Tech. Employed in Pb. & Sind Bank as P.O. at Jallandhar. Avoid Gotras: Nain, Brar, Beniwal, Cont.: 09467037995
- SM4 Jat Boy (DOB 21.04.90) 25.6/5'9" B.Tech. Working as Assistant in Haryana Civil Secretariat in Excise & Taxation Deptt. Only son, Father and mother Gazetted Officers in Haryana government. Avoid Gotras: Mor,Siwach, Singroha, Cont.: 09988701460
- SM4 Jat Boy 27/5'8" B.A., L.L.B. Practicising in District Court Panchkula. Avoid Gotras: Balyan, Nehra, Cont.: 09996844340
- SM4 Jat Boy 28/5'10" B.A.PGDCA (70%) from P.U. Employed in Pb. Coop. Bank as Regular D.E.O. (Pay Rs. 35000/- per month) Father in Haryana Govt. Own Flat at Panchkula. Tri-city math preferred. Avoid Gotras: Gill, Nandal, Bazar, Cont.: 09876875845

भारत राष्ट्र के गठन में जाटों की भूमिका

-डा. राजेंद्र कुमार

जाट समुदाय का कृषि कार्य में सैंकड़ों वर्षों से कोई सानी नहीं है, यह बात सल्तनत, मुगल और अंग्रेज शासकों द्वारा सदैव स्वीकार की गयी है और यह इन काल–खण्डों के अभिलेखों में उल्लिखित है। देश का पेट पालने के अलावा यह समुदाय अनन्त काल से भारत के सामाजिक–आर्थिक विकास में तो सहयोग दे ही रहा है, लंबे समय से देश की सुरक्षा और राज्य शासन विधि ा को भी प्रभावित करने में समर्थ रहा है। इस संदर्भ में पूर्व राष्ट्रपति डा. जाकिर हुसैन ने जाट रेजीमेंट सेंटर में यूनिट्स को झण्डा प्रदान करते हुए कहा था– 'जाटों का इतिहास भारत का इतिहास है।'

1857 के स्वतंत्रता संग्राम से लेकर 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति तक देश की स्वाधीनता के लिए इस समुदाय ने अप्रतिम संघर्ष तो किया ही, द्विराष्ट्र सिद्धांत और पाकिस्तान की स्थापना का पुरजोर और सक्रिय विरोध किया। यह सर्वमान्य तथ्य है कि यदि 1945 में चौधरी सर छोटूराम का देहांत न हुआ होता तो भारत का विभाजन नहीं हो सकता था। यही नहीं यदि जाटों का दबाव न होता तो पाकिस्तान बनने के बाद वर्तमान राजस्थान, मध्य प्रदेश और आंध्र प्रदेश का अधिकांश भाग पाकिस्तान में चला जाता। इसे रोकने में जाटों का सक्रिय योगदान रहा है– यह एक ऐसा ऐतिहासिक तथ्य है जिसकी जानकारी इतिहास की पाठ्यपुस्तकों से तो गायब है ही, जनसामान्य के भी संज्ञान में नहीं लाई गयी।

पाकिस्तान के पांव फैलाने की इस नीति को ठप करने में जाटों की इस महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में जानने के लिए हमें पिछली शताब्दी के चौथे दशक में लौटना होगा। 1930 और 1931 में पहले और दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भारतीय रियासतों के संगठन और संघ तथा ब्रिटिश भारत के संबंध पर भी विचार किया गया था। एक यह प्रस्ताव आया कि भारत को एक महासंघ का आकार दिया जाये– एक पश्चिमी और पूर्वी भाग जिसमें मुस्लिम आबादी का बाहुल्य था, दूसरा भाग जिसमें मुस्लिम आबादी कम थी और तीसरा एक जिसमें रियासतों को स्वायत्त इकाइयां माना जाये। गोलमेज सम्मेलन विफल हुए लेकिन उनमें रियासतों को आमंत्रित करने और उनके प्रतिनिधित्व से रजवाड़े अपना महत्व समझ गये।

बुरी आदतों की कीमत दो बार चुकानी पड़ती है, एक बार जब आप उनके प्रभाव में आते हैं, दूसरी जब वह नुकसान पहुंचाती हैं। –अज्ञात

1945 में लेबर पार्टी के क्लिमेंट एटली ने ब्रिटेन का प्रधानमंत्री बनते ही भारत की राजनीतिक स्थिति का अध्ययन करने तथा भारत को अधिराज्य का दर्जा प्रदान करने के उद्देश्य से मार्च 1946 में एक उच्च शक्तियुक्त केबिनेट मिशन भारत भेजा जिसमें लार्ड पैथिक लारेंस, सर स्टेफर्ड क्रिप्स तथा ए. वी. अलेक्जेंडर शामिल थे। देश के नेताओं, नरेशों तथा अन्य प्रतिनिधियों से लंबी बातचीत के बाद 12 मई को इस मिशन ने रियासतों की प्रभुता के संबंध में ज्ञापिका की घोषणा की। 16 मई को केबिनेट मिशन ने घोषित किया कि भारत को एक संयुक्त अधिराज्य के रूप में स्वतंत्रता दी जायेगी, इसके तीन समूह होंगे। मुस्लिम आबादी वाले प्रांत– सिंध, पंजाब, बलूचिस्तान और उत्तरी–पश्चिमी सीमांत क्षेत्र एक समूह में रहेंगे और बंगाल और असम दूसरे में। मध्य और दक्षिण भारत के हिन्दू बहुसंख्य क्षेत्र दूसरे समूह में होंगे। रियासतों को तीसरे समूह में रखा जायेगा। केंद्र सरकार दिल्ली से सारे देश का राज चलायेगी और उसके पास रक्षा, करेंसी, राजनयिक तथा विदेश विभाग होंगे। अन्य शक्तियां और जिम्मेदारियां सूबों को दी जायेंगी जो अपने समूह के अनुसार इनका निर्वाह करेंगे। कांग्रेस कार्य समिति ने इस योजना को खारिज कर दिया। लेकिन स्वतंत्रता–प्राप्ति के लक्ष्य को सामने रखकर संविधान समिति में वह भाग लेने को तैयार हो गयी। वायसराय ने 15 जून 1946 को चौदह व्यक्तियों को सत्ता हस्तांतरण हेतु अंतरिम सरकार में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। इनमें जवाहरलाल नेहरू, वल्लभ भाई पटेल, राजेंद्र प्रसाद, सी. राजगोपालाचारी और हरेकृष्ण मेहताब कांग्रेस से, मोहम्मद अली जिन्ना, लियाकत अली खां, मोहम्मद इस्माइल खां, ख्वाजा निजामुद्दीन और अब्दुल रब निश्तर मुस्लिम लीग से, सरदार बलदेव सिंह सिख प्रतिनिधि, एन.पी. इंजीनियर (पारसी), जगजीवनराम (अनुसूचित जाति) आदि सम्मिलित किये गये। किंतु कांग्रेस से मतभेदों के कारण जिन्ना ने मुस्लिम लीग को संविधान समिति से अलग कर लिया और मुसलमानों के लिए अलग पाकिस्तान की मांग रख दी। देश की सांप्रदायिक एकता पूरी तरह छिन्न–भिन्न हो गयी।

राजनैतिक दलों से लंबी वार्ताओं और विचार विमर्शों के बाद अंत में ब्रिटिश सरकार ने भारत का विभाजन करके दो अधिराज्यों, भारत व पाकिस्तान को सत्ता हस्तांतरण करना स्वीकार कर लिया और भारत को जून 1946 में आजादी देना तय हो गया। उसी समय वायसराय लार्ड वेवल ने रियासतों को इस बात का आश्वासन दिया कि भावी भारतीय राज्य व्यवस्था का निर्धारण उनसे शर्तें निश्चित करने के बाद ही होगा तथा यह कि ब्रिटिश सम्राट ने यह घोषित किया है कि भारतीय रियासतें अपनी शर्तों के आधार पर भारत या पाकिस्तान की राज्य व्यवस्था में शामिल हो सकती हैं। लार्ड वेवल को इंग्लैंड वापस बुला लिया गया और 22 मार्च 1947 को लार्ड माउंटबेटन वायसराय बनकर भारत पहुंचे। भारत की राजनीतिक स्थिति का सरसरी तौर पर आकलन करके वह लंदन गये और व्हाइट हाल तथा ब्रिटिश सरकार से गंभीर विचार विमर्श करने के बाद 30 मई को भारत लौटकर उन्होंने स्थिति का फिर से जायजा लिया। 3 जून 1947 को माउंटबेटन ने घोषणा कर दी कि दोनों अधिराज्यों को सत्ता हस्तांतरण की तारीख 15 अगस्त 1947 तय कर दी गयी है। इससे वायसराय और राजनीतिक दलों के बीच बातचीत और मोल–तौल में तेजी आ गयी। कांग्रेस के विरोधी तत्व एकाएक सक्रिय हो गये। ब्रिटिश सरकार का पोलिटिकल डिपार्टमेंट इनमें से एक था।

माइेल एडवार्डेस अपनी पुस्तक 'द लास्ट ईयर्स आफ ब्रिटिश इंडिया' में पोलिटिकल डिपार्टमेंट की भारत विरोधी भावनाओं, षडयंत्रों और क्रियाकलापों का सुबोध रूप में वर्णन करते हुए लिखते हैं– 'रजवाड़ों में ऐसा कोई न था जिसका अंग्रेज सरकार में कोई हितैषी न हो। रियासतों से जुड़े इन मध्यवर्गीय अंग्रेजों को उन रियासतों में कल लिये गये मजों की याद थी जिन्हें वे भविष्य में भी जारी रखने के इच्छुक थे। कम से कम एक अंग्रेज बीते युग के इन अवशेषों की ओर से लड़ने को पूर्ण रूप से उद्यत था। यह व्यक्ति था पोलिटिकल डिपार्टमेंट का मुखिया सर कोनराड कोरफील्ड, जो ब्रिटिश सम्राट के प्रतिनिधि का सलाहकार भी था। उसे कांग्रेस से सख्त नफरत थी और उसने ठान रखा था कि रियासतों को कांग्रेस के चंगुल से बचाना है। कोरफील्ड की देखरेख में देशी रियासतों का इस्तेमाल करते हुए एकीकृत भारत को सत्ता हस्तांतरण से रोकने के लिए पालिटिकल विभाग द्वारा ऐसे घृणित षडयंत्र की योजना बनाई गयी जिसके अंतर्गत भारत को इतने अधिक से अधिक टुकड़ों में बंटने को मजबूर कर दिया जाये, जिनता संभव हो। यह सर कोरफील्ड के ही खल–दिमाग की उपज थी कि राजपूताना की रियासतों का या तो स्वतंत्र संघ बनाया जाये या वे पाकिस्तान के साथ रहें। यह विष–बीज रजवाड़ों के मन में बोकर वह उनका मार्गदर्शक तथा तत्वज्ञ बन गया। राजपूत रियासतों के संघ के गठन के लिए समय की दरकार थी और इतना समय शेष नहीं था कि उसे प्रभावी रूप से तैयार किया जा सके। अतः पोलिटिकल विभाग ने देशी नरेशों को पाकिस्तान के साथ जुड़ने की सलाह दी।' दरअसल पोलिटिकल विभाग ब्रिटिश–भारत सरकार के अधीन नहीं था। इसके अतिरिक्त उसमें कार्यरत अंग्रेज अधिकारियों को कांग्रेस से घृणा और मुस्लिम लीग के प्रति सहानुभूति थी और देश आजाद होने के बाद उन सबने पाकिस्तान जाना ही बेहतर समझा।

श्री के.एम. मुंशी 'एक युग का अंत' शीर्षक पुस्तक में लिखते हैं– '1946 के मध्य से, जब भारतीय हाथों में सत्ता हस्तांतरण कीयोजना पर कार्य शुरु हुआ, कोरफील्ड ने जिन्ना पर, जो कांग्रेस के लिए सबसे बड़े सरदर्द थे, हाथ रख लिया। इसके बाद उसने भारतीय अधिराज्य से सौदेबाजी के लिए रजवाड़ों को तीसरी शक्ति के रूप में खड़ा करने की योजना पर काम शुरू कर दिया।

'भारत विभाजन के बाद भारत और पाकिस्तान दो अधिराज्यों को 15 अगस्त 1947 को सत्ता सौंपने की माउंटबेटन की योजना के तहत ब्रिटिश पार्लियामेंट में 9 जुलाई 1947 को इंडियन इंडिपेंडेंस बिल प्रस्तुत किया गया। निजाम हैदराबाद इससे गंभीर

रूप से क्षुब्ध हुआ और उसने लार्ड माउंटबेटन को आगाह किया कि उन्होंने अपने 'पुराने मित्र' को त्याग दिया है, यह सरासर विश्वासघात और बदनीयती है और हैदराबाद को तीसरे अधिाराज्य का दर्जा दिया जाना चाहिए। यह विचार कोनराड कोरफील्ड, जो इसका सक्रिय उद्यमी था, ने हैदराबाद के पूर्व रेजीडेंट आर्थर लोथियन की मार्फत निजाम तक पहुंचाया था और उसे पूरी सहायता का आश्वासन दिया था। पोलिटिकल विभाग के अधिकारियों के अनुसार यदि भारत को खंडित ही होना है, जैसा कि निश्चित प्रतीत होता है, तो यह ब्रिटिश कब्जे में रहकर गोरे लोगों का भार उठाये रखने में तभी सक्षम रहेगा यदि यह ऐसे अनेक अधिराज्यों में विभाजित हो जिनमें प्रत्येक यूनाइटेड किंगडम से निकटता से जुड़ा हुआ रहे। यह समाधान ऐसा था जिसमें निजाम को स्वतंत्र होने की चिरयोजित महत्वकांक्षा की पूर्ति दिखाई दी।

'कोरफील्ड लंदन गया और ब्रिटेन के भारत मंत्री से मिला। उसने लार्ड लिस्टोवैल तथा व्हाइट हाल के अन्य अधिकारियों से पोलिटिकल विभाग की भूमिका पर विचार विमर्श किया। भारत आते ही उसने वायसराय को विश्वास में लिए बिना और बगैर उसकी सहमति लिए आदेश दे दिया कि पोलिटिकल विभाग में रखी रियासतों की फाइलें जिनमें नरेशों की व्यक्तिगत और सार्वजनिक कलंक कथाओं के विस्तृत विवरण दर्ज थे, नष्ट कर दी जायें ताकि भारत सरकार और रियासतों के बीच छावनियों, रेलवे डाक आदि व्यवस्थाओं के समस्त प्रबंध रद कर दिये जायें। इस दौरान हैदराबाद रियासत में भारत सरकार का एक महत्वपूर्ण सैनिक अड्डा था। सिकंदराबाद स्थित इस बेस में सात से आठ हजार सैनिक तथा बख्तरबंद रेजिमेंट मौजूद थी। कोरफील्ड की योजना इस सेना को 15 अगस्त को देश के कांग्रेस शासन में जाने से पहले ही रियासत से दूर करने की थी। निजाम के संवैधानिक सलाहकार सर वाल्टर मोंकटन ने केंद्र सरकार से कोरफील्ड की मदद से तुरत–फुरत में इस सेना को हटाने की अनुमति ले ली। इस फौज को हटाने के क्या दुष्परिणाम हुए, हम सब जानते हैं।'

कांग्रेस ने नवंबर 1946 के मेरठ सेशन में सारी रियासतों को भारत का अविभाजित अंग मानते हुए स्वतंत्रता के बाद भारत से अभिन्न रहने का प्रस्ताव पारित कर दिया था, लेकिन देशी नरेश इससे सहमत नहीं थे। जोधपुर के 24 वर्षीय महाराज ने अपनी रियासत को पाकिस्तान के साथ मिलाने का मन बना लिया और अपनी सेना से जाट रिसालों को, जिनकी संख्या अफसरों को मिलाकर 850 से अधिक थी, नौकरी से निकालकर अपनी ढीठता का परिचय दिया। यद्यपि उसके सलाहकारों ने उसे पाकिस्तान से न मिलकर अन्य रियासतों का संगठन बनाकर पाकिस्तान के साथ संधियों से जुड़ने के लिए समझाया जिससे रियासत की सत्ता पर अपने ही वंश का अधिकार बना रहे। महाराजा ने अन्य राजपूत रियासतों– बीकानेर, जयपुर, कोटा, बूंदी आदि के शासकों से संपर्क किया। इन सबकी राय बनी कि यदि उदयपुर के महाराणा को साथ जुड़ने के लिए मनाया जा सके तो भरतपुर और धौलपुर की जाट रियासतों को छोड़कर बाकी की राजपूताना रियासतें एक ब्लाक के रूप में पाकिस्तान के साथ जा सकती हैं। इससे वहां के शासन में हमेशा उनकी दावेदारी मजबूत रहेगी। पाकिस्तान के निर्माताओं ने जोधपुर के युवा, अनुभवहीन नरेश हनवंत सिंह को अनेक आकर्षक प्रलोभन भी दिये थे।

भोपाल के चतुर नवाब हमीदुल्ला खां ने, जो देशी राज्यों के संगठन 'प्रिंसेज चैंबर' का चांसलर था, रजवाड़ों के सामूहिक प्रभुत्व का अलग सिद्धांत प्रस्तुत किया कि कोई भी नरेश चांसलर की अनुमति के बिना भारत अधिराज्य में शामिल नहीं होगा। वस्तुतः भोपाल के नवाब की सहानुभूति पाकिस्तान के साथ थी। महाराजा जोधपुर ने अपने प्रभाव में आकर बड़ौदा नरेश से अपना साथ देने के लिए संपर्क किया, जिससे जोधपुर, उदयपुर, इंदौर, भोपाल और इंदौर तक का इलाका संगठित क्षेत्र के रूप में पाकिस्तान के साथ जा सके। दूतों की परस्पर आवाजाही होने लगी, मंत्रणाएं चालू हो गयीं।

जब उदयपुर के महाराणा भूपाल सिंह को जोधपुर तथा अन्य नरेशों ने इस योजना में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया और उनकी इच्छा पूछी, तो राणा प्रताप के वंशज ने दो टूक उत्तर दिया– "मेरा मंतव्य तो मेरे पूर्वजों द्वारा निर्धारित कर दिया गया था। अगर वे डगमगा जाते तो हैदराबाद रियासत से भी विशाल राज्य हमारे लिए छोड़कर जाते। वे विचलित नहीं हुए, मैं भी नहीं हो सकता। मैं भारत के साथ हूं।" महाराणा ने राजपूत नरेशों पर व्यंग्य कसते हुए कहा कि उनके परिवारों के मुगलों के साथ पूर्व में विवाह संबंध होते रहे हैं और उनमें से कुछ मुगल सेना और प्रशासन में उच्च पदों पर रहे हैं, स्पष्ट है कि वे पाकिस्तान के साथ निकट संबंध निबाहना चाहेंगे।

इस व्यंग्य से नरेशों के हौसले टूट गये और उनमें से अधिकांश ने भारत की संप्रभुता स्वीकार करने के पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए दिल्ली की ओर प्रस्थान करने में देर नहीं की, किन्तु जोधपुर नरेश पाकिस्तान के साथ जाने के लिए अटल था। एच.वी. होडसन, जो वायसराय का संवैधानिक सलाहकार रह चुका था, अपनी पुस्तक 'द ग्रेट डिवाइड : ब्रिटेन, इंडिया, पाकिस्तान' में जोधपुर नरेश की गतिविधियों के बारे में लिखता है– 'यहां जोधपुर के संदर्भ में बात करनी जरूरी है क्योंकि इससे स्पष्ट होता है कि जिन्ना भारत से रियासतों को हड़पने के लिए कहां तक जा सकने को उद्यत था। जोधपुर– एक हिन्दू रियासत, जो पाकिस्तान से सटी थी, उसकी अधिकांश आबादी हिन्दू थी और शासक भी हिन्दू था। उसका शासक पाकिस्तान से मिलने हेतु जिन्ना और अन्य मुस्लिम नेताओं से लगातार संपर्क में रहा। उनके साथ बैठकें कीं और भोपाल के नवाब का तो वह बगलगीर ही बन गया। जिन्ना ने उसे कराची बंदरगाह को फ्री पोर्ट के रूप में प्रयोग करने, बिना चुंगी हथियारों के आयात, जोधपुर–सिंध रेलवे उसके अधिकार–क्षेत्र में देने, अकाल सहायता के रूप में भारी मात्रा में मुत अनाज की आपूर्ति करने (जोधपुर राज्य में हर तीसरे–चौथे साल अकाल पड़ता था) तथा जोधपुर और भी जो शर्तें चाहे 15 अगस्त के बाद पाकिस्तान द्वारा पूरी किये जाने का लालच दिया।'

शिक्षक राष्ट्र निर्माण की धुरी, शिक्षा ढ़ांचे में आमूल चूल परिवर्तन जरूरी

- प्राचार्य पी.के. राजौरा
प्रोफेसर डा. दुर्गपाल सिंह सोलंकी

''गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय, बलिहारी गुरु आपकी, जिन गोविंद दियो बताय''। शिक्षक का स्थान आज भी सर्वोपरि है। शिक्षक इसे राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति है, अतः यह परम आवश्यक है कि वे इस देश के युवाओं को ज्ञानवान बनाएं। सामान्य शिक्षक जानकारी देता है, अच्छा शिक्षक समझाता है, असाधारण शिक्षक प्रदर्शन करता है और योग्य शिक्षक प्रेरणा देता है। जो वक्त की आंधी से खबरदार नहीं है, वे शिक्षक कहने के हकदार नहीं हैं। बाल्यकाल से लेकर युवावस्था तक की उम्र मनुष्य के गढ़ने की होती है और इसी अवसाि की पूर्णता व्यक्ति के जीवन को मुख–शांति के साथ कर्म करने के लिये प्रवृत करती है।''

उक्त विचार आसाम राइफलस पब्लिक स्कूल, शिलांग (मेघालय) के पूर्व प्राचार्य श्री पी.के. राजौरा ने शिक्षक दिवस पर संपन्न स्वागत–विदाई–सम्मान समारोह में बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किए। गुरु–शिष्य परंपरा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि जीवन को ज्ञान रूपी ज्योति दिखाने वाले इस 'गुरु' को साक्षात पूजने की परंपरा शिक्षाविद डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस से शुरु मानी जाती है, लेकिन पुरातनकाल में कर्ण, अर्जुन, एकलव्य, आरुणि जैसे शिष्यों को उनकी गुरुभक्ति के कारण वे आज भी पूज्यनीय हैं। शिक्षा की लौ हर दिल में प्रज्जवलित करना आसान काम नहीं है और जिन लोगों ने यह अलख जगाने को संकल्प लिया है; उन्हीं की वंदना का दिवस है– यह शिक्षक दिवस। शिक्षक दिवस के प्रणेता स्वयं शिक्षक रहे और जीवन भर लोगों को शिक्षा का पाठ पढ़ाते रहे।

शासकीय कमला राजा कन्या स्वशासी पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, ग्वालियर की प्रोफेसर डा. सुधा सिंह ने कहा कि डा. राधाकृष्णन एक प्रखर वक्ता और आदर्श शिक्षक थे। भारतीय सभ्यता और संस्कृति को अंगीकार किए दार्शनिक स्वभाव के साथ–साथ महान विचारक ने तकरीबन चालीस 40 वर्ष तक शिक्षण का कार्य किया। उन्होंने ब्रिटेन के एडिनबरा विश्वविद्यालय में दिए गए अपने भाषण में कहा था कि मानव को एक होना चाहिए। मानव इतिहास का संपूर्ण लक्ष्य मानव जाति की मुक्ति के लिए ही होना चाहिए। वे ''वसुधैव कुटुंबकम' की अवधारणा को मानने वाले थे। पूरे विश्व को एक इकाई के रूप में रखकर शैक्षिक प्रबंधन के पक्षधर डा. कृष्णन बुद्धिमतापूर्ण व्याख्यानों से छात्र–छात्राओं व अध्यापकों के बीच अत्यंत सम्मानित व लोकप्रिय थे।

किशोरी रमण पोस्टग्रेजुएट कालेज, मथुरा के राजनीति विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डा. सुधीर प्रताप सोलंकी ने कहा कि शिक्षण कार्य में जबरदस्त पकड़ रखने के कारण दर्शनशास्त्र जैसे गूढ़ विषय को भी रोचक बनाकर पढ़ाने वाले डा. कृष्णन आज की पीढ़ी के लिए निर्विवाद रूप से प्रेरणा स्रोत हैं। उनका जीवन शिक्षा के लिए दिए अतुलनीय योगदान के लिये हमेशा याद रखा जायेगा।

गोविंदराम सकसैरिया इंजीनियरिंग संस्थान, इंदौर के परीक्षा नियंत्रक प्रो. कृष्ण प्रताप पोरस ने कहा कि शिक्षक उन्हीं लोगों को बनना चाहिए जो सर्वाधिक योग्य और बुद्धिमान हों। शासकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय, भोपाल की प्रो. मंजुला पोरस ने कहा कि जब तक शिक्षक शिक्षा के प्रति समर्पित और प्रतिबद्ध नहीं होता और शिक्षा को मिशन नहीं मानता, तब तक अच्छी शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती।

इतिहासविद प्रोफेसर कुं. अरुण प्रताप सिंह ने कहा कि दीनबंधु सर छोटूराम और महान क्रांतिकारी राष्ट्रपति रहे, राजा महेंद्र प्रताप जी की शिक्षा योजनाओं के क्रियान्वयन से ही हिन्दुस्तान प्रगति के पथ पर बढ़ सकेगा। कालिदास शासकीय कालेज, उज्जैन के वरिष्ठ प्रोफेसर नरेश कुमार सिंह ने कहा कि डा. राधाकृष्णन ने समाज के उत्थान के लिए शिक्षा प्रसार को मूल मंत्र मान्य किया। शिक्षक को विद्यार्थियों को पढ़ाकर ही संतुष्ट नहीं होना चाहिए, वरन उन्हें अपने विद्यार्थियों का आदर और स्नेह भी अर्जित करना चाहिए। श्री सतीश उपाध्याय बेसवां, अलीगढ़ ने शिक्षा जगत के स्थापित मूल्यों के क्षरण पर चिंता व्यक्त की। सोनकच्छ कालेज, देवास के पूर्व प्रोफेसर डा. दौलराम चतुर्वेदी ने शिक्षक के सामाजिक सरोकारों पर प्रकाश डाला। आगरा कुं. अजीत सोलंकी ने छात्राओं के उनके कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी चौ. तेज सिंह वर्मा का कहना था कि शिक्षा व ज्ञान के प्रति समर्पण की भावना और निरंतर सीखने की प्रवृति मनुष्य को निरंतर प्रगति की ओर ले जाती है।

अध्यक्षीय संबोधन में शिक्षाविद, डिग्री कालेज में 32 वर्ष प्रिंसिपल पद पर आरुढ़ रहे, राजा महेंद्र प्रताप शोध संस्थान के अध्यक्ष एवं दीन बंधु सर छोटूराम मिशन के राष्ट्रीय महासचिव प्रोफेसर डा. दुर्गपाल सिंह सोलंकी ने कहा कि वर्तमान शिक्षा ढ़ांचे में आमूल चूल परिवर्तन की आवश्यकता है। उच्च शिक्षा कुछ हाथों तक ही सीमित होकर रह गयी है। जब तक उच्च शिक्षा आम आदमी तक नहीं पहुंचेगी, तब तक सामाजिक व राजनैतिक सुधारों के बारे में सोचा नहीं जा सकता। डा. सोलंकी ने शिक्षकों का आहवान किया कि वे सामाजिक मुद्दों पर समाज को एकजुट करें।

प्रारंभ में समाजसेवी श्रीमती बिमलेश सिंह ने मां शारदे के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर एवं अजीत अत्री ने डा. राधाकृष्णन के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए परिचय, स्वागत, वंदन, अभिनंदन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। संजीव कुमार कक्कू ने सेवानिवृत्त शिक्षकों को शाल, प्रशस्ति पत्र, गीता–रामायण, कुरान व बाइबिल प्रदान कर सम्मानित किया। अंशुमान सिंह ने आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

संयोजक शिक्षक दिवस समारोह

Organises on the Spot Poster Making Competition on 23-11-2016

For School Going students

A Poster Making Competition will be organized by JAT SABHA, CHANDIGARH for school going students on **23rd November, 2016** from **10 to 11 AM** in the premises of **JAT BHAWAN**, 2-B, Sector 27-A, Madhya Marg, Chandigarh.

The aim of this Competition is to generate creative spirit among the children and polish the existing potential among them. To widen the scope of talent search in this field and give incentive to the deserving children, it has been decided to classify all the students into three categories as under:-

Category A	**Class III to V**
Category B	**Class VI to VIII**
Category C	**Class IX to XII**

For each category there will be prizes of Rs. 2100/-, Rs. 1500/-, Rs.1100/- and three consolation prizes of Rs. 500/-each. The topic of the Poster Competition will be "**Bechara Kisan**" **(बेचारा किसान).** Duration of the Competition will of one hour. Entries for the Competition may be sent to **JAT BHAWAN**, 2-B, SECTOR 27-A, CHANDIGARH -160019 by post or personally by 20th November, 2016 up to 5 P.M. with entry fee of Rs. 10/- per participant.

Bus Fare/Conveyance charges of Rs. 20/- per participant will be given to the students/participants of local Chandigarh, participants/students coming from Mohali, Panchkula will be paid Rs. 30/- per participant as Bus Fare/conveyance charges, while students participating in the Competition from Pinjore, Kalka etc. will be paid Rs. 50/- per participant for the Competition. Students/ participants coming from Haryana, Punjab to take part in this Competition will be paid actual to & fro bus fare per participant.

Terms & Conditions of the Competition are as under :-

1. The participants must bring their identity cards or the identity slips along with attested photograph issued by the Head of the Institution/School for eligibility in the Contest.
2. The participants should bring their own drawing material and cardboard. Only drawing sheets will be given by the Competition Organizers.
3. The judgment of the Chairman of the Competition will be final and binding on all.
4. The result of the Competition will be announced on the same day and prize winners will be honoured with cash awards and merit certificates on the eve of Basant Panchmi & Birth Day Celebrations of Deen Bandhu Sir Chhotu Ram on 01st February, 2017 at Sir Chhotu Ram Jat Bhawan, Sector 6, Panchkula.

Further enquiries may be made on Telephone Nos. **0172-2654932, 2641127** or personally from the Jat Sabha Office, at **JAT BHAWAN, 2-B, Sector 27-A, Madhya Marg, Chandigarh.- 160019.**

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़
जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फ़ोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया ।